ISSN : 1948-2279-0993
छत्तीसगढ़ प्रेस कौंसिल, छत्तीसगढ़ एवं शेफाली मीडिया पब्लिकेशन ग्रुप की प्रस्तुति
r : 9 | Issue 96
मूल्य – ₹ 10 संस्थागत एवं पुस्तकालय सहयोग मूल्य – ₹ 150

छत्तीसगढ़ आस-पास

नवंबर 2015

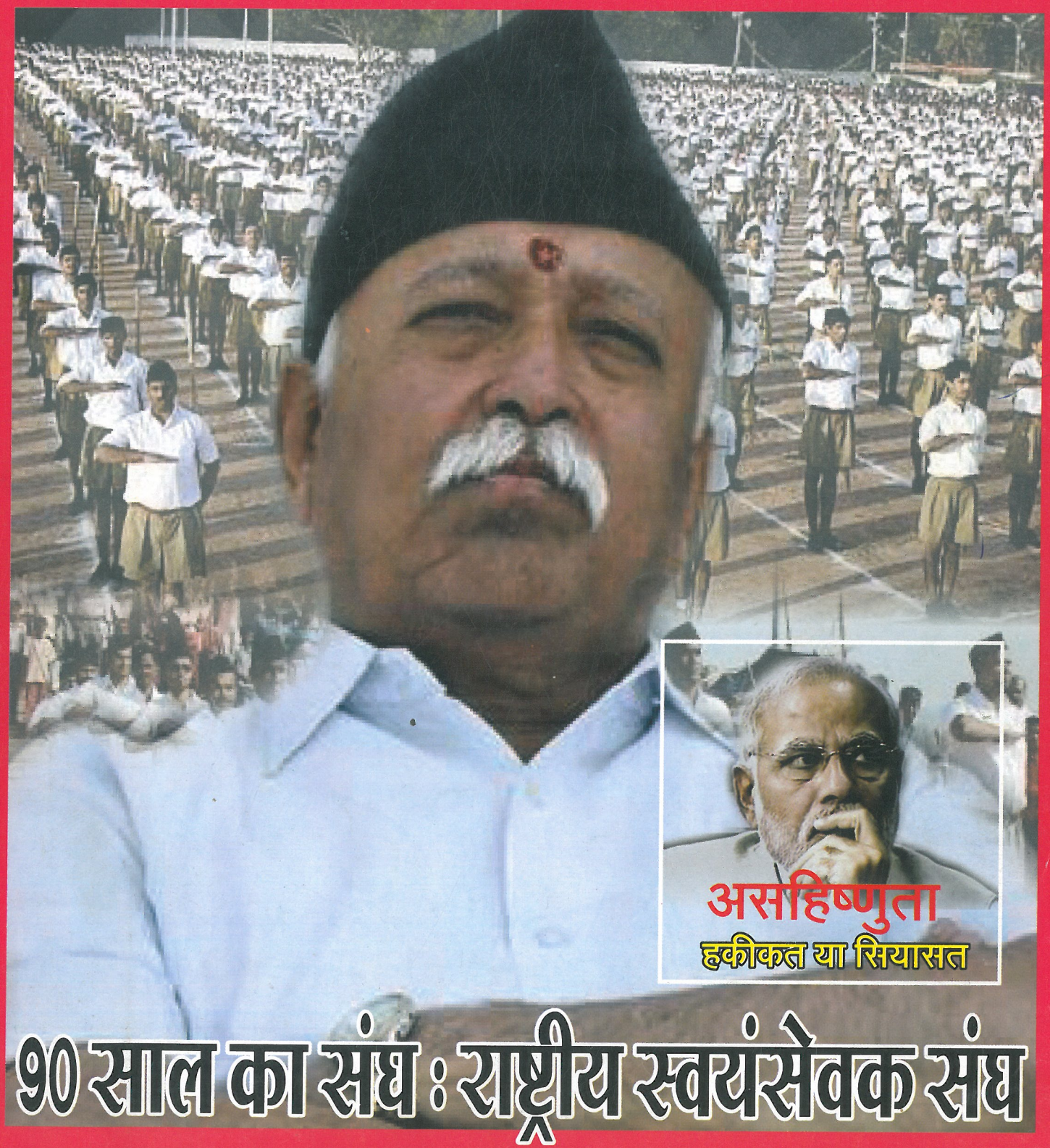

NOVEMBER 2015

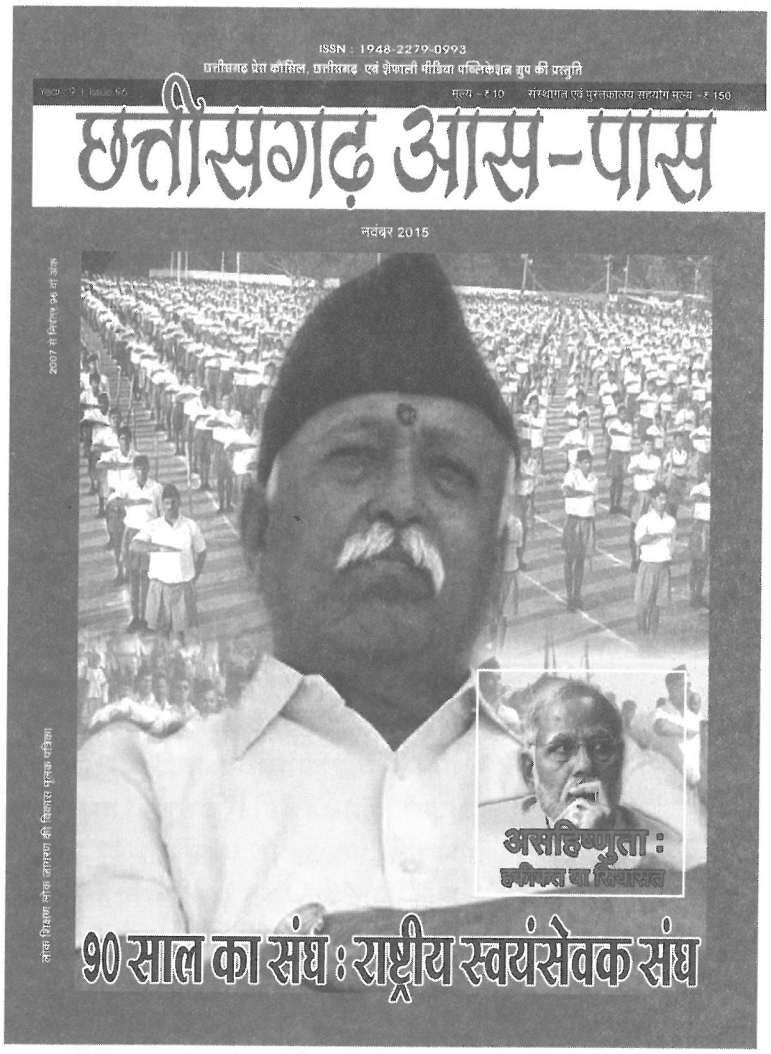

इस अंक में :- नवंबर 2015

03 संपादकीय, प्रदीप भट्टाचार्य
07 नब्बे साल का संघ : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
10 नब्बे साल में भी युवा , प्रो. राकेश सिन्हा
13 नेहरु बनाम संघ की बेकार बहस, ए. सूर्यप्रकाश
14 असहिष्णुता हकीकत या सियासत, एस. गुरुमूर्ति
16 हमारे विकास का मतलब भूख पर जीत
17 ऊँची उड़ान भरता युवा छत्तीसगढ़, सुदीप बनर्जी
18 राज्य अलंकरण सम्मानित होने वालों के नाम
19 आईआईटी भिलाई में ही, डॉ. नौशाद सिद्दीकी
21 मुद्दा आईआईटी, बदरुद्दीन कुरैशी
21 आईआईटी को लेकर हो रही राजनीति
22 ओलंपिक संघ रिपोर्ट, घनश्याम प्रसाद साहू
24 बहस : आउटसोर्सिंग, प्रेमप्रकाश पाण्डेय
25 बहस : आउटसोर्सिंग, कनक तिवारी
26 निकाय चुनाव 2015, सुरेश वाहने
31 श्रद्धांजलि : सरदार वल्लभभाई पटेल
32 विचार : स्व का तंत्र, डॉ. सुचित्रा शर्मा
33 कथा संवाद : विलासी, शरदचंद चट्टोपाध्याय
34 साहित्य मत, राजेन्द्र चांडक
37 काव्यमंच, किशोर कुमार तिवारी
44 जरा हटके, वीरेन्द्र ओगले
45 कुछ जमीन से कुछ हवा से, विनोद साव
46 इस माह का चिंतन, श्रीमती शेफाली भट्टाचार्य
48 दादा को नमन, उत्तम कुमार भट्टाचार्य

ब्यूरो

रायपुर
के.एन.व्ही. किरण

जिला-दुर्ग
नीरज कुमार वरेटवार

भिलाई
हमीद अहमद शाह

कुम्हारी
सुरेश वाहने

कुरुद जुनवानी
धर्मेन्द्र निर्मल

राजनांदगांव
राहुल गौतम

डोंगरगढ़
जितेन्द्र गुप्ता

बिलासपुर
दिलीप अग्रवाल

बेमेतरा
राजेन्द्र निर्मलकर

रायगढ़
सुनील कुमार गर्ग

पत्थलगांव
सुनील अग्रवाल

अम्बिकापुर
आलोक त्रिपाठी

सरगुजा
महेन्द्र मिश्रा

सीतापुर
शिव कुमार गुप्ता

मैनपाट
सुनील कुमार बकला

मनेन्द्रगढ़ कोरिया
पंकज गुप्ता

बलरामपुर
संजय कुमार गुप्ता

नवागढ़
मनोज कुमार श्रीवास्तव

धमधा
कृष्ण कुमार सोनकर
प्रदीप ताम्रकार

कोण्डागांव बस्तर
दिनेश जैन

जगदलपुर
राजेश थापत

प्रतापपुर सूरजपुर
श्रवण कुमार

कवर्धा
सूर्यकांत केशरी
घनश्याम प्रसाद साहू

जाँजगीर-चाँपा
बीरेन्द्र सिंह

मध्यप्रदेश भोपाल
कुमारी निरुपमा

जिन संस्थानों की लाइब्रेरी हेतु स्वीकृत है छत्तीसगढ़ आस-पास

- छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग, रायपुर
- सेन्ट्रल लाइब्रेरी, बीटीआई, भिलाई इस्पात संयंत्र
- पब्लिक लाइब्रेरी, सिविक सेन्टर, भिलाई इस्पात संयंत्र
- कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, रायपुर
- कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेक्टर-7, भिलाई
- श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, सेक्टर-6, भिलाई
- स्वामी स्वरुपानंद सरस्वती महाविद्यालय, हुडको सेक्टर, भिलाई
- श्री शंकराचार्य विद्यालय, हुडको सेक्टर, भिलाई
- श्री शंकराचार्य कॉलेज ऑफ नर्सिंग, हुडको सेक्टर, भिलाई
- इंदू आई.टी.स्कूल, कोहका जिला-दुर्ग
- शकुंतला ग्रुप ऑफ स्कूल्स, भिलाई
- बंगीय कृष्टि परिषद्, सेक्टर-4, भिलाई

छत्तीसगढ़ आस-पास प्रदेश के सभी 27 जिलो एवं समस्त बुक स्टालों पर उपलब्ध है।

नोट :-

● सर्वाधिक सुरक्षित/सामग्री की नकल प्रतिबंधित है। ● छत्तीसगढ़ आस-पास में प्रकाशित सभी लेखों पर संपादक की सहमति हो यह आवश्यक नही ● सभी विवादों का निपटारा केवल दुर्ग कोर्ट/फोरम में होगा ● विज्ञापन एवं सदस्यता शुल्क का डी.डी./चेक **छत्तीसगढ़ आस-पास भिलाई** के नाम से देय हो ● टंकन एवं तकनीकि त्रुटि की वजह से प्रिंटिंग में होने वाली गड़बड़ी के लिये संपादकीय टीम जवाबदेह नही होगे ● पत्रिका में तथ्यों के प्रकाशन पर पूरा ध्यान रखा गया है। सहमति, असहमति की दशा में विनम्र रचनात्मक, प्रामाणिक ध्यानाकर्षण पर संबंधित का पक्ष प्रकाशित किया जायेगा ● अपने सुधि पाठकों के लिए हम विभिन्न माध्यमों एवं संस्थानों की भी कई बार साभार रचना सामग्री श्रेष्ठ पठनीयता एवं लोकशिक्षण -लोकजागरण के मकसद से प्रकाशित करते है। ऐसे मामलों में तकनीकि त्रुटि के चलते संयोगवश किन्हीं परिस्थितियों में साभार शब्द प्रकाशित न होने की दशा में किसी भी प्रकार का वाद विवाद स्वीकार नही होगा यह पूर्व सूचना है।

संपादक - पूर्णत: अवैतनिक है।

क्या भारत स्वतंत्र हो गया है ?

हर साल की तरह हमने इस वर्ष भी अपने स्वतंत्रता दिवस को धूमधाम से मनाया। समाचार पत्रों में जिसे पूरी शिद्दत के साथ प्रकाशित किया। यदि हम किसी से यह पूछें कि "क्या भारत स्वतंत्र हो गया है?" तो वह विस्मित हो हमें न जाने किन निगाहों से अवलोकित करने लगेगा, और कहेगा– आश्चर्य है, आपने यह कैसा प्रश्न पूछा, मैं क्या, सारा जमाना इस बात को मानता है। भारत के हर गांव का हर अपठित और निरक्षर व्यक्ति भी इस बात को तो जानता ही है कि हम आज आजाद भारत के निवासी हैं। आप कैसे विचित्र हैं कि आजादी के 68 वर्ष पूरे होने के बाद भी ये पूछ रहे है। आखिर हर 15 अगस्त में हम क्या करते हैं?स्वतंत्र होने के दिन को उत्सव के रूप में मनाते हैं। हर व्यक्ति इस दिन स्वयं को देशप्रेम की भावना से सराबोर मानता है। महत्वपूर्ण शासकीय संस्थानों में हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा पूरी आन मान शान से लहराता है। हमारी इस विरासत का ब्यौरा 15 अगस्त 1947 की कहानी के रूप में मोटे अक्षरों में अंकित है। क्या आप इस दिन की महत्ता से परिचित नहीं है। फिर 26 जनवरी आती है तो हम अपनी पूरी सार्थक स्वाधीनता को प्रदर्शित करते ही हैं। भला कोई अपनी संवैधानिक व्यवस्था और कानूनों का लागू होना क्या जानेगा नहीं। भाई, अपने आखिर इस प्रश्न को किस रहस्य को जानने के लिए किया है। मैने उसकी हैरानी को शांत करते हुए अपनी बात रखी। जैसे केले के पत्ते के नीचे कई परतें छिपी होती हैं वैसे ही हमने हमारे इस प्रश्न के पीछे वह रहस्य है जिसे हमने जानने का प्रयास कभी किया नहीं। यह सच है कि हमें 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से कानूनी और अधिकारिक तौर पर आजादी मिली, उनकी हुकुमत से मुक्ति मिली और हमने चैन की सांस ले जीना प्रारंभ किया। इस स्वतंत्रता का हमने मान रखा और ऊपरी तौर पर स्वीकृत कर सेलिब्रेट किया पर उसका गूढ़ मर्म न खुद समझे, और न दूसरों को समझने की कोशिश की।

हम हर साल भारत में स्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय पर्व बड़ी शान से मनाते रहे हैं। उस समय हमारा मन देश के प्रति प्रेम भाव से भरा होता है। पर तरक्की के सोपान चढ़ता हमारा देश भारत और इंडिया में बंटता चला गया। हमें इस विरोधाभासी विकसित होती सांस्कृतिक मानसिकता के प्रति अपनी संवेदना को देखने की फुरसत और सोच व्यवस्तता के बीच खो गई। भारत की इस विरोधाभासी और असंतुलित प्रगति का सटीक विश्लेषण ओशो ने किया भले ही वो कड़वा था, पर था असरदार। भारत को स्वतंत्रता मिली उन सभी के प्रयासों से, जो हमारे सेनानियों की चेतना का एक मात्र लक्ष्य था। अंग्रेजों की हुकुमत से मुक्ति, यह सोच भले ही नकारात्मक रही पर वह उस समय की अनिवार्य आवश्यकता थी। जब हम स्वतंत्र होंगे तो भावी समाज इसे किस रूप में लेगा और उसके दुष्परिणाम भी कुछ हो सकते हैं, यह उनके प्रयासों में कहीं नहीं रहा। उन्होनें कभी अंदाजा भी नहीं लगाया होगा कि हमारा आने वाला इंडिया प्रश्नों की श्रृंख्ला और समस्याओं में घिर जायेगा कि हमारे आने वाले निर्माताओं को स्वतंत्रता को नये सिरे से परिभाषित और व्यवस्थित करने की जरूरत भी महसूस हो सकती है। ऐसे समय इस नकारात्मक सोच को समाप्त कर अपनी समस्त प्रकार की ऊर्जा को सकारात्मक और सर्वस्वीकृत दिशा देने की स्थिति परिहार्य है।

स्वतंत्रता अर्थात स्व का तंत्र अर्थात व्यवस्था होने की स्थिति। स्व–तंत्र अर्थात् खुद के प्रति व्यवस्था होने की स्थिति। स्व–तंत्र बड़ा ही गूढ़ार्थ और खूबसूरत शब्द है। स्व–तंत्र वही अर्थात स्व का तंत्र किसका होगा। हम कैसे स्व का तंत्र बना सकते है?सर्वप्रथम इस शब्द का आपरेशन ही उसका वही अर्थ प्रस्तुत करेगा, जो सच है। यह एक प्रक्रिया है, एक ऐसी तकनीक, एक चाबी जो हमारे अंतस का दरवाजा खोल सकती है। यह कोई बनी बनाई व्यवस्था नहीं है, इसे हमें स्वयं बनाना होगा। जिस किसी ने भी इस दरवाजे को खोला, वहीं सही मायने में स्वतंत्र अर्थात् आजाद है। सभी के बीच सर्व सामाजिक बंधनों से जुड़ा परन्तु स्वतंत्र होगा। जैसे कीचड़ में रहने वाला कमल कितना निर्लिप्त कितना प्यारा और कितना न्यारा लगता है। बिल्कुल कमल की तरह रहना ही स्व–तंत्र की स्थिति है। हम चाहे किसी भी जगह हो राजनैतिक रूप, मानसिक तथा आत्मिक रूप से आजाद स्थिति भले ही हो पर हम क्या सभी आने वाली स्थिति में सिर्फ पाना चाहते है, जीतने की ही अदम्य इच्छा रखते हो अथवा अपनी हार, अपने खोने की स्थिति को भी उतनी उदारता के साथ स्वीकार करते है। सुख–दुःख में एक सा रहते है।

<u>संपूर्ण एवं सच्ची स्वतंत्रता–</u>

वास्तव में यह सच्चाई है कि कोई भी वास्तविक रूप संपूर्ण वह सच्ची स्वतंत्रता की स्थिति में स्वयं को रख ही नहीं सकते। जरा–मृत्यु, रोग–शोक, विवाद–विक्षिप्तता, अन्याय–आतंक, असमर्थता–अशांति आदि आदि में से किसी न किसी दुःख या क्लेष रूपी तंत्र में आधीन हैं अर्थात परतंत्र है। जब तक हम स्व को जानेंगे नहीं हम कौन है?हमारा क्या रूप है?हम कहां से आये हैं और हमें कहां जाना हैं?सच्ची स्वतंत्रता वह स्थिति है जिसमें मनुष्य किसी भी सम–विषम परिस्थिति अर्थात् पर स्थिति में एक सा हो। स्व के तंत्र में स्थित हो। स्व अर्थात् खुद को जानना। वह कौन है?क्या है?क्या चाहता है?हममें से किसी ने भी क्या इन दो प्रश्नों के उत्तर खोजे हैं?पहला, वह खुद से क्या चाहता है?और दूसरा, दूसरे उससे क्या चाहते है?इस स्थिति के बजाय हमारा पूरा समय इस बात के कैद में रहता है कि दूसरा क्या कर रहा है अथवा दूसरों को क्या करना चाहिये?हमारी सोच स्व के बजाय 'पर' पर केन्द्रित हो गई है।

स्व अर्थात शरीर की आत्मिक स्थिति जो कुछ सात्विक गुणों का संकुल है। खुशी, आनंद, ज्ञान, पवित्रता, प्रेम, शांति, शक्ति जैसे गुण जो हमारे व्यवहार में प्रदर्शित होते हैं। जिनसे व्यक्ति दूसरों की नजर में महत्वपूर्ण और मूल्यवान हो जाता है। आज बजाय 'स्व' में केन्द्रित होने के 'पर' अर्थात् शरीर से संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति पर व्यक्तियों की संलप्तिता बढ़ती जा रही है। जिसके दुष्परिणाम सामाजिक समस्याओं के रूप में समाज की नींव को घुन की तरह खोखला कर रहे हैं।

भले ही हम आज राजनैतिक रूप से स्वतंत्र हो गये है। अंग्रेजों की दासता से आजाद हो गये है। परन्तु स्वतंत्र शब्द की गूढ़ता से परे, अनजाने ही परतंत्र हो जा रहे है। यह कोई देशज स्वतंत्रता नहीं बल्कि व्यक्तिगत परतंत्रता है। जो हमारी वैचारिक एवं मानसिक स्वतंत्रता के हनन में हमारी आत्मिक स्वतंत्रता को प्रभावित कर रही है। हमारा राष्ट्रीय चरित्र परतंत्रता में तब्दील होता दिखाई देने लगा है। आज हमें अपने चिंतन को बदलने की आवश्यकता है, ताकि हम पूरे समाज को स्वतंत्र व परतंत्र के वास्तविक मर्म को समझा सकें। स्वतंत्रता की चाह किसे नहीं है, सभी चाहते हैं पर इसे संभालने की परिपक्वता की पुरजोर कोशिश सभी को करनी होगी।

बकौल दुष्यन्त –

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
सारी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिये।।

अंततः स्वतंत्रता की मजबूती के लिए बहुत से मजबूत कंधे, सकारात्मक ऊर्जा एवं सार्थक प्रयास, प्रबल आत्मविश्वास और आत्मिक गुणों की पालना ही स्वतंत्र की सहेज होगी। उन तमाम खोजी मस्तिष्कों को अपनी श्रृंखला तैयार करनी होगी ताकि हमारी आध्यात्मिक पूंजी एकत्रित कर देश को उस स्वतंत्र की ओर ले जायेगी जो हमें मानसिक बल प्रदान कर आजादी के मायने समझा, एक अलग किस्म के स्वतंत्र समाज की बुनियाद बनेगी। भारत तथा इंडिया का फर्क समाप्त होगा और नये विहान के आलोक से सारी सृष्टि जगमगाने लगेगी।

▶ डॉ. सुचित्रा शर्मा
(स.प्रा.) समाजशास्त्र
शा.वि.या.ता.स्व.स्नातकोत्तर
महाविद्यालय दुर्ग
(लेखिका संपर्क : 9424128806)